www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वाधीनता के मंत्रदाता-

लोकमान्य तिलक



-पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

स्वाधीनता के मंत्रदाता— लोकमान्य तिलक

उत्थान और पतन जगत् का अटल नियम है। जो एक समय ऊपर उठता है, उसे कुछ समय पश्चात् नीचे भी उतरना पड़ता है। फिर कुछ समय पश्चात् उसको पहले से भी अधिक ऊपर उठाने का अवसर मिल सकता है, यदि वह अपनी आत्मा और परमात्मा में विश्वास रखे और अपना कर्तव्यपालन करता रहे। प्राकृतिक नियमानुसार इस प्रकार के परिवर्तन में कोई दोष नहीं माना जाता, वरन् जीवन के विविध प्रकार के अनुभव प्राप्त करते हुए प्रगति का यही मार्ग माना गया है। इसी तथ्य को समझकर हमारे किसी कवि ने गाया है—"सब दिन जात न एक समान।"

भारतवर्ष के इतिहास में हमको इस सिद्धांत की सचाई का पूरा प्रमाण मिलता है। प्राचीन ऋषि-मुनियों ने धर्म और आस्तिकता के आधार पर भारतीय-संस्कृति के भवन का इतना सुदृढ़ निर्माण किया कि काल-चक्र के अनेकों धक्के खाकर—उतार-चढ़ाव देखकर भी उसकी नींव मजबूत बनी रही। अनेक बार बाहरी शक्तियों ने उससे टक्कर ली, थोड़े बहुत समय के लिए आंशिक रूप से उस पर अपना प्रभाव भी जमाया, पर अंत में आक्रमणकारियों को आत्मसात् करके भारतीय-संस्कृति पुनः अधिक शक्तिशाली रूप में प्रकट हुई। महाभारत के गृह-युद्ध के पश्चात् देश में पर्याप्त शिथिलता आ गई और लगभग दो-ढाई हजार वर्ष तक वह सामान्य रूप से जीवन-यापन करता रहा। तब सिकंदर के आक्रमण के रूप में उसको एक धक्का लगा। यद्यपि सिकंदर की गति लाहौर के आस-पास ही रुक गई, पर इसने भारत की संस्कृति और सभ्यता पर विशेष प्रभाव डाला। सिकंदर यूनानी संस्कृति का प्रतिनिधि था, जिसको अपने भौतिक ज्ञान और शक्ति पर अभिमान था। भारत की आध्यात्मिक संस्कृति से उसका संयोग होने से एक नवीन ज्ञान-शक्ति प्रस्फुटित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हुई। गौतम बुद्ध के रूप में इस देश को एक नया मार्ग-दर्शक मिला और उससे अनुप्राणित होकर भारतीय-संस्कृति नवीन शक्ति से प्रगति करने लगी और एशिया के एक छोर से दूसरे छोर तक छा गई।

इसी प्रकार बाद में हूण, शक, सिरियन जातियों के छोटे-बड़े आक्रमण होते रहे, पर अप्रत्यक्ष रूप से वे इस देश की प्रगति में सहायक ही सिद्ध हुए। बाहर से आने वाली जातियाँ भारतीय-संस्कृति से प्रभावित होकर आर्य जाति में ही समाती चली गईं और अपनी कुछ विशेषताओं को देकर इस देश की स्थिति को अधिक दृढ़ बनाती गईं।

भारत को दूसरा बड़ा धक्का मुसलमानी आक्रमण के रूप में सहन करना पड़ा। ये लोग यहीं पर स्थायी रूप से बस गये और अपनी विजातीय संस्कृति और धर्म को यहाँ के निवासियों पर जबर्दस्ती लादने का प्रयत्न करने लगे। मुसलमानों ने भौतिक दृष्टि से भारत के एक भाग को अवश्य पराभूत कर दिया, पर वे उसकी आत्मा को प्रभावित न कर सके। मुसलमानी शासन काल में भी यहाँ चैतन्य, रामानंद, तुलसी, समर्थ रामदास जैसी दिव्य विभूतियाँ प्रकट होती रहीं, जिन्होंने हिंदू-जाति के मनोबल को ऊँचा उठाये रखा और समस्त देश में भारतीय-धर्म की एक नई लहर प्रवाहित कर दी, जिसने अंत में 'मुसलमानियत' को अधिकांश में निरस्त कर दिया।

तीसरा धक्का 'ईसाइयत' का था। योरोप की कितनी ही जातियाँ भौतिक ज्ञान-विज्ञान से शक्तिशाली बनकर संसार पर अधिकार जमाने के लिए दौड़ीं और उनमें से अंग्रेज भारत पर अपना व्यापक प्रभाव जमाने में सफल हो गये। उन्होंने केवल राजनीतिक दृष्टि से ही समस्त देश को अपने अधीन नहीं कर लिया, वरन् यह भी चेष्टा की, कि धर्म और सभ्यता की दृष्टि से भी यहाँ के निवासियों को पराभूत करके पूर्णरूप से अपना अनुयायी बना लिया जाये। और वास्तव में एक बार 'ईसाई सभ्यता' की लहर देश के कितने ही भागों में, विशेषतः उस समय के प्रगतिशील बंगाल में इतने जोरों से फैली कि भारतीय संस्कृति के हितैषियों के हृदय शंकाकुल हो गये। पर फिर भी भारतीय संस्कृति की सुदृढ़ता ने अपना रंग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दिखाया और राजा राम मोहनराय, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद आदि के रूप में हिंदू धर्म की पताका को संभालने वाले उत्पन्न कर दिये, जिन्होंने 'ईसाइयत' के आक्रमण को अधिकांश में विफल कर दिया।

इस प्रकार धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से तो अंग्रेजों का प्रभाव बहुत कुछ रोक दिया गया, पर राजनीतिक दृष्टि से उनका 'शिकंजा' दिन पर दिन मजबूत होता जाता था। सन् १८५७ में एक बार देश ने उनके शासन को हटाने की चेष्टा की, पर यहाँ के पुराने हथियारों के मुकाबले में उनके नये ढंग के अस्त्र-शस्त्र अधिक कारगर सिद्ध हुए। उसके पश्चात् तो उन्होंने 'आर्म्स एक्ट' द्वारा इस देश को पूरी तरह निःशस्त्र ही कर दिया, जिससे उनको किसी प्रकार के सशस्त्र विद्रोह का भय नहीं रह गया।

स्वदेशी और स्वराज्य का शंखनाद—

ऐसे संकट-काल में भारत के राजनीतिक क्षेत्र में लोकमान्य तिलक का आविर्भाव हुआ, जिन्होंने शारीरिक शक्ति के बजाय मानसिक और भावना क्षेत्र में अंग्रेजों का मुकाबला करके उनके प्रभाव को कम करना आरंभ किया। यह तिलक की ही महिमा थी कि अंग्रेजों के एक प्रधान गढ़ बंबई में उन्नीसवीं शताब्दी के समाप्त होने के पहले ही स्वदेशी और स्वराज्य का शंखनाद सुनाई पड़ने लगा, जिससे समस्त देश चौकन्ना हो गया। बीसवीं शताब्दी आरंभ होते ही एक नवीन रूप में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह खड़ा हो गया, जिसने अंत में सन् १९४७ में उनको यहाँ से हटाकर ही छोड़ा।

लोकमान्य का जन्म सन् १८५६ में महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में हुआ था। उनके पिता श्री गंगाधर तिलक एक स्कूल में मामूली अध्यापक थे। उन्होंने अपने पुत्र का नाम 'बलवंत' रखा था। पर प्यार से सब उसे 'बाल' पुकारते थे और आगे चलकर वही नाम समस्त संसार में प्रसिद्ध हो गया। उनकी प्रारंभिक शिक्षा पूना के स्कूल में हुई। सन् १८७६ में उन्होंने 'डेन कॉलेज' से बी० ए० की परीक्षा पास की और इसके तीन वर्ष बाद बंबई विश्वविद्यालय से एल० एल-बी० की उपाधि प्राप्त कर ली।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



लोकमान्य तिलक की प्रतिभा और अध्यवसाय को देखते हुए उनके मित्रों को आशा थी कि वे वकालत के धंधे में अपूर्व सफलता प्राप्त करके शीघ्र ही धन और वैभव के स्वामी बन जायेंगे, पर तिलक का ध्यान किसी और ही तरफ था। वे देख रहे थे कि भारतवासी केवल राजनीतिक दृष्टि से ही अंग्रेजों के अधीन हो गये हैं। वे पश्चिमी सभ्यता की चमक-दमक की चकाचौंध से भ्रमित होकर अपनी सभ्यता और संस्कृति को तिलांजलि देते जाते हैं और यदि यही स्थिति अधिक समय तक बनी रही, तो वे ही अंग्रेजी शासन के सुदृढ़ स्तंभ बन जायेंगे। उस दशा में भारत के पुनः स्वाधीन और आत्मावलंबी होने की आशा सदा के लिए क्षीण हो जायेगी। इसलिए उन्होंने वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण करते ही लड़कों की शिक्षा के लिए एक ऐसी शिक्षण संस्था स्थापित करने का उद्योग आरंभ किया, जहाँ पर जीवन निर्वाह की शिक्षा देने के साथ ही उनमें जातीय और राष्ट्रीय भावों की वृद्धि भी की जाये, जबकि सरकारी स्कूलों में लड़कों को केवल सरकारी क्लर्क बनने की निगाह से ही पढ़ाया-लिखाया जाता था। लोकमान्य उनको ऐसा भारतीय नागरिक बनाना चाहते थे, जो अपने धर्म, सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के लिए भी सचेष्ट रहें।

लोकमान्य तिलक के सार्वजनिक जीवन का सबसे पहला कदम पूना में सन् १८८० में 'न्यू इंगलिश स्कूल' की स्थापना करना था। इसमें उनके दो प्रधान सहयोगी श्री विष्णु शास्त्री चिपलूणकर और श्री आगरकर थे। आगे चलकर इसमें श्री गोपालकृष्ण गोखले और अन्य अनेक देशभक्त विद्वान् भी सम्मिलित हो गये, पर इसकी जड़ जमाने वाले लोकमान्य तिलक ही थे। इसमें संदेह नहीं कि महाराष्ट्र में राष्ट्रीय भावों के प्रसार में इस संस्था ने बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान किया और पूना को तो राजनीतिक आंदोलन का एक ऐसा जोरदार केंद्र बना दिया कि अंग्रेज सरकार अंतिम समय तक उससे भयभीत ही बनी रही।

'न्यू इंगलिश स्कूल' स्थापना के ४-५ वर्ष बाद ही लोकमान्य तिलक ने पूना में ही फर्गुसन कॉलेज की नींव डाली और उसे भी एक आदर्श शिक्षा संस्था बना दिया। यह कहने में कुछ अतिशयोक्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नहीं कि आज बंबई प्रांत में जो राजनीतिक जाग्रति दिखाई पड़ रही है, उसका अधिकांश श्रेय 'फर्गुसन कॉलेज' में शिक्षा प्राप्त करके निकलने वाले विद्यार्थियों को ही है।

समाचार पत्र-प्रकाशन—

देश में नवीन राष्ट्रीय-चेतना और देश-सेवा की भावना उत्पन्न करने का कार्य स्कूलों द्वारा बहुत शीघ्र नहीं हो सकता था। इसलिए लोकमान्य का ध्यान आरंभ से ही समाचार पत्र-प्रकाशन की तरफ था। जैसे ही उनकी शिक्षा-संस्था का काम कुछ जम गया और उनको उससे अवकाश मिला, उन्होंने इस ओर भी ध्यान दिया। मराठी भाषा में 'केसरी' और अंग्रेजी में 'मराठा' नाम के साप्ताहिक पत्रों का श्री गणेश तो उन्होंने सन् १८८१ में ही कर दिया था और सहकारियों की सहायता से उनका संचालन करते जाते थे। आगे चलकर उन्होंने शिक्षा-संस्थाओं का भार अन्य लोगों को दे दिया, तो वे पूरी शक्ति इन्हीं में लगाने लगे। कहते हैं कि समय पड़ने पर वे इनका टाइप स्वयं करते थे। छपे कागजों को मोड़ने तथा पैकट बनाने आदि का काम भी स्वयं कर लेते थे। इस प्रकार उन्होंने संपादक से लेकर दफ्तरी और कुली तक का काम स्वयं करके इन पत्रों की जड़ जमाई। वह जमाना समाचार पत्रों के अनुकूल न था। न तो सरकारी कानून के अनुसार उनको किसी प्रकार की स्वतंत्रता थी और न जनता उनका महत्त्व समझती थी। इसलिए उस समय जितने पत्र निकलते थे, वे सब त्यागी और सेवाभावी व्यक्तियों द्वारा ही संचालित थे और उनको वे अपना तन-मन-धन लगाकर ही स्थिर रख पाते थे। अन्यथा १०० में से ६५ समाचार पत्र जन्म लेने के साल-छह महीने के भीतर ही अपनी जीवन लीला समाप्त कर देते थे।

यह तिलक महाराज की अपार विद्वता का परिणाम था कि कुछ वर्षों में ही ये दोनों पत्र पूर्ण स्वावलंबी हो गये और उन्होंने महाराष्ट्र ही नहीं समस्त देश के सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन पर चिरस्मरणीय प्रभाव डाला। उस समय अधिकांश समाचार पत्र सरकार की आलोचना करते समय विरोध का एक भी शब्द लिखने में भयभीत होते थे। अगर कभी किसी सुधार के लिए लिखना पड़ता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



था तो वह एक प्रार्थना के रूप में ही होता था। उस युग में केवल लोकमान्य तिलक का 'केसरी' तथा कलकत्ते का 'अमृत बाजार पत्रिका' ही ऐसे पत्र थे, जो निर्भय होकर सरकार की अनुचित कार्यवाहियों की बड़ी आलोचना करते थे और बड़े-बड़े अधिकारियों की चालों का भंडाफोड़ कर देते थे।

'केसरी' के मुखपृष्ठ पर ही आदर्श-वाक्य (मोटो) के रूप में एक पद्य छपा करता था, जिसका हिंदी भाषांतर किसी कवि ने इस प्रकार किया था—

रे गयन्द मतिअन्ध छिनहु समुचित तोहि नाहीं।
बसिवो अब यह विपिन घोर दुर्गम भुवि माहीं।।
गज शिलानि सो जानि नखन सो विद्रापति करि।
गिरि-कन्दर में परये आज निद्रित यह केहरि।।

इस पद्य में तिलक महाराज ने विदेशी शासकों को 'अन्योक्ति' अलंकार के रूप में चेतावनी दी है कि—"यह भारत रूपी सिंह अभी निद्रित अवस्था में पड़ा है और इसी से निष्क्रिय जान पड़ता है। तुम्हारा हित इसी में है कि समय रहते ही इस देश को छोड़ जाओ, अन्यथा जब यह जाग्रत होगा तो जान बचाना कठिन पड़ जायेगा।'

उस समय हिंदी में किसी राष्ट्रीय पत्र का बड़ा अभाव था, इसलिए तिलक महाराज की प्रेरणा से नागपुर से 'हिंदी केसरी' निकाला गया, जिसमें लोकमान्य तिलक के मराठी लेखों का भाषांतर प्रकाशित किया जाता था। पर वह थोड़े ही दिन तक चल सका, क्योंकि सन् १९०८ में तिलक महाराज पर राज विद्रोह का मुकद्मा चलाकर सजा हो जाने पर उसे बंद कर दिया गया।

कोल्हापुर के दीवान ने, जो अंग्रेजों का पिट्ठू था। वहाँ के शासक को अपदस्थ करके राज्य के समस्त साधनों को स्वयं हथियाने का कुचक्र रचाया। लोकमान्य तिलक ने उसकी सब करतूतों को प्रकट करके ऐसे तीव्र प्रहार किये कि चारों तरफ हलचल मच गई। अंग्रेज सरकार के बलबूते पर उसने लोकमान्य तिलक तथा उनके मित्र 'भदाण' के संपादक श्री आग़रकर पर मानहानि का मुकद्मा चलाया, जिसमें जनता ने पूरी तरह से तिलक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का साथ दिया और फीरोज शाह मेहता तथा तैलंग जैसे नामी वकीलों ने उनकी तरफ से अदालत में पैरवी की, पर सरकार उनके विरुद्ध थी, इसलिए दोनों को चार-चार महीने की कड़ी कैद की सजा सुना दी गई। जब सजा समाप्त करके वे बाहर निकले तो उनका बड़ी धूमधाम से स्वागत किया गया और उसी समय से उनकी लोकप्रियता दिन पर दिन बढ़ती चली गई।

सामाजिक जागृति के त्यौहार—

पर्व और त्यौहारों का भी जन-जीवन में बहुत प्रमुख स्थान होता है और हिंदू जाति में तो इनको विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण माना गया है। यद्यपि आजकल त्यौहारों के मनाने में रूढ़िवादिता की प्रवृत्ति बहुत बढ़ गई है, इसलिए अनेक व्यक्ति उनको अनुपयोगी कहने लग गये हैं तो भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि पिछले जमाने में 'मुसलमानियत' और 'ईसाइयत' से हिंदू जाति की रक्षा करने में पर्व और त्यौहारों ने विशेष रूप से योगदान किया है। इनके प्रभाव से अशिक्षित और अविकसित लोगों में भी अपने धर्म के प्रति आस्था बनी रही और अनेक कठिनाइयों तथा प्रलोभन आने पर भी वे अपने परंपरागत धर्म-विश्वासों पर दृढ़ रहे। लोकमान्य तिलक ने इस तथ्य को समझकर जनता में ऐसे त्यौहारों का प्रचलन किया, जो वर्तमान समय की दृष्टि से विशेष उपयोगी हों और लोगों में जातीयता के भावों की वृद्धि कर सकें।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने सन् १८९३ में 'गणपति-उत्सव' तथा १८९४ में 'शिवाजी-जयंती'—दो बड़े त्यौहार समारोहपूर्वक संगठित रूप में मनाने का प्रचलन किया। गणेश जी का पूजन और गणेश चतुर्थी का त्यौहार यद्यपि प्राचीन समय से मनाया जा रहा था, पर लोकमान्य तिलक ने उसे जातीय-पर्व का रूप दिया। श्री शिवाजी महाराज की स्मृति को पुनरुज्जीवित करने और उसे हिंदुत्व की रक्षा के लिए प्रेरणाप्रद रूप में मनाने का श्री गणेश उन्हीं ने किया। इसके फल से समस्त महाराष्ट्र में उत्साह की एक लहर व्याप्त हो गई और चारों तरफ जागृति के चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इससे अंग्रेज अधिकारियों में भय और रोष उत्पन्न हो गया और वे इस जागृति को दबाने का प्रयत्न करने लगे।

इसी समय पूना में और उसके बाद बंबई में हिंदू-मुस्लिम दंगे हो गये। अंग्रेज अधिकारियों ने इसका दोष लोकमान्य तिलक द्वारा प्रचारित 'शिवाजी जयंती' के उत्सव पर डालना चाहा। उसके संकेत पर कुछ मुसलमान नेताओं ने लोकमान्य के विरुद्ध ऐसे आक्षेप सार्वजनिक रूप से लगाये भी। सरकारी अधिकारियों का कहना था कि इन उत्सवों के कारण मुसलमान बहुत रुष्ट हो गये हैं, इसी कारण दंगे भड़क उठे। पर तिलक जी ने इन आक्षेपों को सर्वथा असत्य बतलाते हुए दंगों का कारण सरकार को ही बतलाया और अपने पत्रों में स्पष्ट रूप से लिखा—

"मैं समझता हूँ कि इन सब झगड़ों का कारण सरकार ही है। उसकी पक्षपातपूर्ण नीति के कारण ही दंगों की शुरूआत होती है। देश में इस समय हिंदू-मुस्लिम द्वेष के बीज बोये जा रहे हैं। लार्ड डफरिन की भेदनीति ही सब दंगों का मूल कारण है।"

लोकमान्य ने उस समय जो कुछ लिखा था, वह बाद में अंग्रेजी सरकार के कारनामों से अक्षरशः सत्य सिद्ध हो गया। उसने मुसलमानों को विशेष रूप से बढ़ावा देकर कांग्रेस से अलग रहने और अपने पृथक् अधिकार माँगने की मनोवृत्ति को भड़काया। इसी के फल से देश में समय-समय पर सांप्रदायिक दंगे होते रहे। मुसलमान भारतीय राजनीतिक आंदोलन से अलग होकर पृथक् अधिकारों की माँग करने लगे, जिसका अंतिम परिणाम पाकिस्तान की स्थापना हुआ, पर तिलक जी कभी सरकार के चक्कर में नहीं आये। उन्होंने हिंदुओं को कभी मुसलमानों के प्रति शत्रु-भाव की प्रेरणा नहीं दी, वरन् कई दंगों में कट्टर मुसलमानों द्वारा कुछ लोगों के मारे जाने पर भी हिंदुओं से बदले की भावना रखकर कोई अनुचित कार्य न करने की ही इस प्रकार अपील की—

"यदि मुसलमान पशुता एवं अमानुषिक कृत्यों पर तुल गये हैं तो तुम्हें भी तत्काल रक्तपात और अनुचित उपायों का अवलंबन नहीं करना चाहिए। अपने को संगठन द्वारा अधिक से अधिक दृढ़

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बनाने का प्रयास करो। जब इस प्रकार शक्तिशाली हो जाओगे तो दंगे होंगे ही नहीं।"

इस पर भी मुसलमान नेताओं ने उनको अपना कट्टर सांप्रदायिक शत्रु बतलाया, पर यह उनकी भूल थी। लोकमान्य भारतीय स्वाधीनता के सच्चे उपासक थे और वे किसी भारतीय को धर्म के आधार पर शत्रु नहीं मानते थे। यही कारण था कि 'अलीबंधु' जैसे प्रमुख मुसलमान नेताओं ने यह कहा कि, "राजनीति में तिलक ही हमारे गुरु हैं।" इसके अतिरिक्त 'आफताब, के संपादक सैयद तैदर रजा और मौलाना हसरत मोहानी जैसे धार्मिक मुसलमान विद्वान् उनके अनुयायी और भक्त थे।

लोकमान्य तिलक ने उपरोक्त बातों को केवल मुख से ही नहीं कहा, वरन् स्थान-स्थान घूमकर इनका प्रचार किया और दंगे की भावना को ठंडा किया, फिर भी उनकी आलोचना तत्कालीन वायसराय लार्ड डफरिन को बहुत बुरी लगी और सरकारी अधिकारियों ने हर उपाय से उनको बदनाम करने की चेष्टा की, पर नतीजा उल्टा ही निकला। जनता को सरकार पर कभी विश्वास न था, इसलिए उसके बुराई करने पर लोगों की श्रद्धा-भक्ति तिलक महाराज के प्रति और भी बढ़ गई। वास्तव में स्पष्टवादिता और प्रत्येक दशा में अपने सिद्धांत पर दृढ़तापूर्वक टिके रहना ही महान् नेताओं के लक्षण हैं। जो लोग हवा के साथ रुख बदलते रहते हैं और थोड़े से लाभ की खातिर एक पक्ष को त्यागकर दूसरे में घुसते रहते हैं, उनका सार्वजनिक जीवन अधिक समय तक नहीं टिक सकता और शीघ्र ही जनता की निगाह से गिर जाते हैं। हमको इस सिद्धांत का पालन केवल राजनीति में ही नहीं करना चाहिए, वरन् समाज, धर्म, व्यक्तिगत व्यवहार सर्वत्र इसका ध्यान रखना आवश्यक है। जो आदमी अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहना नहीं जानते अथवा जिनका कई सिद्धांत नहीं होता, वे कभी सम्मान के पात्र नहीं बन सकते।

स्वाधीनता के लिए संघर्ष और कारावास—

जिस समय तिलक महाराज के लेखों और भाषणों द्वारा स्वाधीनता आंदोलन छेड़ा था, वह ऐसा समय था कि लोग स्वराज्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और स्वतंत्रता का नाम लेते डरते थे। सन् १८५७ के गदर के अवसर पर किया गया घोर दमन लोगों को अभी तक आतंकित किये हुए था और अंग्रेजों की शक्ति को दिन पर दिन बढ़ते देखकर कोई सिर उठाने का साहस न करता था। पर लोकमान्य तिलक इस स्थिति को बदलने का निश्चय कर चुके थे, इसलिए वे सदा सरकार के सभी अनुचित कार्यों की तीव्र आलोचना करते रहे और उसके लिए बार-बार 'दंड' का पुरस्कार सहर्ष ग्रहण करते रहे।

उस समय तक कांग्रेस थोड़े-से राजनैतिक व्याख्यानदाताओं की वाद-विवाद समिति की तरह थी। ज्यादातर नर्म विचारों के राजनीतिक ही उसमें भाग लेते थे और साल भर में एक जगह इकट्ठे होकर दस-पाँच विद्वतापूर्ण भाषण कर लेने और शासन-सुधार संबंधी प्रस्ताव पास कर लेने में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते थे। पर तिलक जी कांग्रेस को स्वाधीनता प्राप्ति का एक प्रभावशाली साधन बनाना चाहते थे, इसलिए वे उस समय भी जोरदार भाषण करते थे और लोगों को स्वाधीनता के लिए प्रयत्न करने की प्रेरणा भी देते थे। सन् १८८६ के कांग्रेस अधिवेशन में दिया गया भाषण श्रोताओं ने बड़ा ओजस्वी माना और अनेकों ने उसे सुन कर देश की स्वतंत्रता के लिए कुछ करने का निश्चय किया।

सन् १८९६ में भारत में प्लेग का बड़ा प्रकोप हुआ, जो एक वर्ष से ज्यादा समय तक विभिन्न भागों में आंतक पैदा करता रहा। पूना नगर में सरकार की ओर से जो 'रैंड' नाम का अंग्रेज अफसर नियुक्त किया गया था, उसका व्यवहार जनता के साथ बड़ा कठोर था और उससे जनता बड़ी आतंकित हो गई थी। इससे पूना के नवयुवक बड़े रोष में आये और चाफेकर नामक युवक ने पिस्तौल से रैंड की हत्या कर दी। इस पर समस्त अंग्रेज अफसर क्रुद्ध हो उठे और चारों ओर दमन की धूम मचा दी, जिससे जनता घबरा गई। लोकमान्य तिलक ने सरकारी अधिकारियों पर दोषारोपण करते हुए 'केसरी' में कई लेख लिखे। यद्यपि उनमें कानून के विरुद्ध कोई बात न थी, पर सरकार ने 'अदालत की मानहानि' के नाम पर तिलक जी को गिरफ्तार कर लिया, उलटी-सीधी कार्यवाही करके १८ महीने की कड़ी कैद की सजा दे दी। जेल में उनके साथ बुरा व्यवहार किया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गया और खराब भोजन दिया गया, जिससे वे बीमार पड़ गये। जब यह समाचार चारों तरफ फैला तो भारतीय जनता ही नहीं, इंगलैंड के अनेक प्रसिद्ध पुरुष सरकारी नीति की निंदा करने लगे। मैक्स मूलर, सर विलियम हंटर, विलियम केन और दादा भाई नौरोजी आदि प्रसिद्ध विद्वानों और नेताओं ने इंगलैंड के उच्च अधिकारियों को बतलाया कि तिलक जैसे महान् विद्वान् के साथ इस प्रकार का व्यवहार किया जाना ब्रिटिश-शासन के लिए कलंक की बात होगी। इन सज्जनों के सम्मिलित प्रयत्न से अंत में तिलक जी को एक वर्ष बाद रिहा कर दिया गया।

जेल में छूटने पर जनता ने उनका जैसा स्वागत किया उसकी मिसाल उस समय तक कभी देखने में नहीं आई थी। एक प्रकार से तिलक महाराज ने स्वयं कष्ट सहकर 'जेल' को भी पवित्र कर दिया, जिसके फलस्वरूप आगे चलकर देश सेवा का व्रत धारण करने वालों ने जेलों का भय ही त्याग दिया। जेल की सजा जो अभी तक अधिकांश में चोर-डाकुओं या अन्य नीच कार्यों के करने वालों तक ही सीमित थी, सेवा, परोपकार और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष की प्रतीक बन गई। समाचार पत्रों में जेल खाने का नाम 'कृष्ण-जन्म-मंदिर' लिखा जाने लगा। जहाँ लोग गिरफ्तारी और जेल भेजे जाने को निंदा और लज्जा की बात मानते थे, वहाँ तिलक महाराज की जेल-यात्रा के पश्चात् उसे सम्मान और जन-सेवा का प्रमाण माना जाने लगा।

कांग्रेस में गर्मदल की स्थापना—

जैसा हम ऊपर कह चुके हैं, "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस" की स्थापना सरकार के सामने जनता की छोटी-बड़ी शिकायतें उपस्थित करने और सामान्य शासन संबंधी सुधारों का प्रस्ताव पास करके उन्हें सरकार की सेवा में भेजने के उद्देश्य से की गई थी, उसमें कई अंग्रेजों और राजभक्त सज्जनों ने भी भाग लिया था। केवल लोकमान्य तिलक जैसे स्वाधीनता प्रेमी नेता ही कभी-कभी उसमें 'गर्म भाषण' सुना देते थे। पर सन् १९०५ में 'बंग-भंग' का आंदोलन छिड़ जाने पर देश में इतनी अधिक राजनीतिक उत्तेजना उत्पन्न हो गई और नवयुवक-वर्ग ऐसे क्रांतिकारी आंदोलन के लिए उद्यत हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गया कि 'कांग्रेस' जैसी देश का राजनीतिक नेतृत्व करने वाली संस्था के लिए उससे अलग रह सकना कठिन हो गया। उस समय इस संस्था की बागडोर मुख्यतः ऐसे ही लोगों के हाथ में थी, जो कुर्सी पर बैठकर एकाध देशभक्ति के विचारों का लेख देने या सजे हुए सभा मंडल में खड़े होकर सुंदर भाषण देने को ही राजनीतिक आंदोलन का लक्षण मानते थे, पर इस समय देश में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध जैसा गर्म-वातावरण उत्पन्न हो गया था, उसमें ऐसी ढीली और निष्क्रिय नीति से काम चल सकना कठिन था। जनता का एक बड़ा भाग कांग्रेस से कोई समयानुकूल जोरदार आंदोलन की आशा करने लगा।

तिलक महाराज उस समय गर्म-दल के सर्व प्रधान नेता थे। वे सरकार के अन्यायपूर्ण कार्यों के विरोध में अंग्रेजी माल का बहिष्कार और सरकारी स्कूलों के 'बायकाट' आदि का प्रचार कर रहे थे। देश के सभी स्वाधीनता-प्रेमी इस नेता के साथ थे। पर 'नर्म-दल' के राजनीतिज्ञ इससे डरते थे। वे विद्वान् और भाषण देने में कुशल अवश्य थे और सामान्यजन हितकारी कार्यों के भी समर्थक थे, पर सरकारी अन्याय का खुलकर विरोध करने और उसके फलस्वरूप कष्ट सहन करने का साहस उनमें न था। साथ ही वे अपने 'नेता-पद' को भी छोड़ना नहीं चाहते थे। इससे दोनों दलों में बनारस कांग्रेस (१९०५) से ही तनातनी होने लग गई थी। सन् १९०६ का कांग्रेस-अधिवेशन कलकत्ता में हुआ और उसके अध्यक्ष वयोवृद्ध नेता दादाभाई नौरोजी बनाये गये, जिनको सभी दलों के व्यक्ति सम्मान की दृष्टि से देखते थे। उन्होंने अपने भाषण में कांग्रेस का लक्ष्य 'स्वराज्य' प्राप्त करना घोषित किया, जो उस समय एक बड़ी बात मानी गई। इसका अर्थ नर्मदल वालों ने 'औपनिवेशिक शासन' के अधिकार समझ लिया और गर्मदल वालों ने 'पूर्ण स्वाधीनता' की भावना से इसे ग्रहण किया। पर यह मतभेद उन लोगों के भीतर ही बना रहा, दादाभाई के प्रभाव से उनके सामने कोई अधिक बोल न सका।

पर १९०७ की सूरत कांग्रेस में यह मतभेद बड़े उग्र रूप में प्रकट हुआ। तिलक महाराज वहाँ पहले से ही पहुँच गये थे। वे भाषण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देकर और अपने अनुयायियों से बात करके अनुकूल वातावरण तैयार कर रहे थे। कांग्रेस के खुले अधिवेशन में उनकी नर्मदल के नेताओं से टक्कर हुई और बात यहाँ तक बढ़ी कि मार-पीट और कुर्सियाँ फेंककर मारने की नौबत आ गई। इस पर उस दिन का अधिवेशन भंग हो गया। दूसरे दिन नर्मदल वालों ने श्री अरविंद घोष की अध्यक्षता में अपनी 'कान्फ्रेन्स' अलग की और इस प्रकार कांग्रेस में दो दल हो गये, जो अपने अधिवेशन आठ-नौ वर्ष तक अलग-अलग ही करते रहे।

'बम'-पार्टी और लोकमान्य तिलक को निर्वासन-दंड—

इस घटना के पश्चात् देश में राजनीतिक आंदोलन का तूफान बड़ी तेजी से बहने लगा। बंगाल में युवकों ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए सशस्त्र क्रांति का कार्यक्रम बनाया और खुदीराम बोस ने एक अंग्रेज अफसर को मारने के उद्देश्य से बम फेंका, जिससे संयोगवश दो अन्य अंग्रेज स्त्रियाँ मारी गईं। इस पर अंग्रेज समाचार पत्रों ने बड़ा शोर मचाया और सब उग्रवादी नेताओं को एक साथ पकड़ लेने की सलाह दी। 'पायोनियर' (इलाहाबाद) ने तो यहाँ तक लिख डाला कि अगर किसी अंग्रेज की हत्या की जाए, तो उसके बदले में दस भारतवासियों को फाँसी पर चढ़ा दिया जाए !

पर तिलक महाराज इस घोर दमन-कांड को देखकर भी भयभीत न हुए। उन्होंने अपने पत्र में "कल्ट ऑफ बम" (बम का सिद्धांत) शीर्षक से लेख लिखा, जिसमें अंग्रेज स्त्रियों की मृत्यु पर बड़ा दुःख प्रकट करते हुए लिखा था कि भारतवर्ष में युवकों ने जो 'बम' का प्रयोग आरंभ किया है, इसका उत्तरदायित्व सरकार की भारत-विरोधी नीति ही है और इसका निवारण देश को न्यायपूर्ण अधिकार देने से ही होगा, केवल दमन के सहारे उसका रोका जा सकना कठिन है। "बम चलाना यद्यपि बहुत बुरा काम है, तथापि इसके मूल में सरकार की दमन नीति ही काम कर रही है। सरकार की इस गलत नीति के कारण ही 'बम' का आविर्भाव हुआ है।"

सरकार ने इन लेखों के आधार पर ही तिलक जी को गिरफ्तार कर लिया और मनमाने ढंग से मुकदमा चलाकर ६ वर्ष की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सजा दे दी। उस समय तिलक महाराज की आयु ५२ वर्ष की थी और उनका स्वास्थ्य भी कमजोर पड़ गया था, पर उन्होंने इस दंड को सहर्ष स्वीकार किया और बड़े साहस के साथ थोड़े-से शब्दों में ही यह प्रकट कर दिया कि सरकार का यह कार्य बिल्कुल अन्यायपूर्ण है। वह इस पर प्रकार दंड देकर आंदोलन को कुचल देना चाहती है, पर इससे तो वह उलटा बढ़ेगा ही। उनके उस बयान का सारांश उसी समय किसी कवि ने इस प्रकार प्रकट किया था—

मुझे आज यद्यपि जूरी ने अपराधी ठहराया है।
तो भी मेरे मन ने मुझको निर्दोषी बतलाया है।।
ईश्वर का संकेत मनोगत दिखलाई यह मुझे पड़े।
मेरे संकट सहने ही से इस हलचल का तेज बढ़े।।

सरकार ने लोकमान्य तिलक को भारतीय जेलों में रखना भी खतरनाक समझकर मांडले (बर्मा) की जेल में भेज दिया। वहाँ की जलवायु भारतवासियों के अनुकूल नहीं थी, इससे उनका स्वास्थ्य और भी खराब रहने लगा, तो भी उन्होंने अपना समय धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन में लगाया और सैकड़ों ग्रंथों का सार इकट्ठा करके 'गीता-रहस्य' नामक अमर ग्रंथ की रचना कर डाली। जेल में रहते हुए ही सन् १९१२ में पूना में उनकी धर्मपत्नी का देहांत हो गया। पर उन्होंने किसी भी कष्ट के पड़ने पर धैर्य नहीं छोड़ा और ६ वर्ष पूरा करके सन् १९१४ में ही छूटकर घर आये।

अपना लक्ष्य पूरा करने के लिए हमको किस तरह सब प्रकार की हानि और कष्टों की चिंता छोड़कर आगे कदम बढ़ाते जाना चाहिए, यही लोकमान्य तिलक के जीवन का संदेश और आदर्श है। जो लोग कोई छोटी-मोटी कठिनाई आ जाने अथवा थोड़ी हानि होते ही मैदान से हट जाते हैं, वे कोई बड़ा काम सिद्ध नहीं कर सकते। लोकमान्य तिलक के साहस और उत्साह को भंग करने के लिए सरकार ने उनको घर से दो हजार मील के फासले पर, जहाँ कोई इष्ट-मित्र न था और न कोई उनकी बात समझ सकता था, ले जाकर डाल दिया। पर वे अपने निर्धारित मार्ग पर डटे रहे और अंत में पहले से भी अधिक तेजस्वी बनकर बाहर निकले। इसमें कुछ भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संदेह नहीं कि उनकी यह 'तपस्या' भारतवर्ष को स्वाधीनता प्रदान कराने में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई। यदि हम कोई बड़ा काम करने की अभिलाषा रखते हैं तो निश्चय ही वह तपस्या और कष्ट सहन के बिना संभव नहीं हो सकता।

होमरूल (स्वराज्य) आंदोलन—

सरकार का तो ख्याल था कि तिलक महाराज को इतनी लंबी और देश-निष्कासन की सजा देने से उनका साहस टूट जायेगा और उनके पीछे से उनका संगठन तथा पत्र आदि समाप्त हो जायेंगे, पर परिणाम उलटा निकला यद्यपि मांडले की जेल में रहने से लोकमान्य का स्वास्थ्य अवश्य बहुत खराब हो गया था, पर उनके साहस में किसी प्रकार का अंतर नहीं पड़ा था। स्वदेश लौटने के कुछ सप्ताह बाद ही उन्होंने अपना कार्य आरंभ किया और श्रीमती ऐनी बेसेंट के साथ मिलकर 'होमरूल आंदोलन' ऐसे जोर से चलाया कि चारों तरफ एक नई जाग्रति और हलचल उत्पन्न हो गई। श्रीमती बेसेंट स्वयं बहुत बड़ी व्याख्यानदाता और प्रचार-कार्य में निपुण थीं। लोकमान्य तिलक का सहयोग पाकर उनका कार्य दिन दूना बढ़ने लगा और शीघ्र ही देश के समस्त बड़े नगरों में 'होमरूल-लीग' की स्थापना हो गई और जनता बहुत बड़ी संख्या में इस आंदोलन में भाग लेने लगी।

इधर लोकमान्य भी जगह-जगह दौरा करके तथा भाषण देकर लोगों को स्वराज्य प्राप्त करने की प्रेरणा दे रहे थे। सन् १९१६ में बंबई में उन्होंने अनेक भाषण देकर जनता में काफी जाग्रति उत्पन्न की। इस पर बंबई सरकार ने उनसे चालीस हजार की जमानत माँग कर उनके काम में पुनः अड़ंगा लगाना चाहा। पर जब यह मामला मजिस्ट्रेट के सामने पेश हुआ तो उसने सरकारी आज्ञा को अवैध घोषित कर दिया। फिर जब वे इस कार्य के लिए दिल्ली और पंजाब में लगे तो वहाँ की सरकार ने उनका प्रवेश अपने यहाँ रोक दिया। इसी समय पर वेलेंटाहन शिरोल नामक भारत में एक पैंसनयाफ्ता अंग्रेज अधिकारी ने 'इंडियन अनरेस्ट' (भारत में अशांति) पुस्तक लिखकर यह दिखलाया कि भारत में समस्त अशांति और हलचल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के कारण तिलक ही हैं। इस बात को पढ़कर लोकमान्य तिलक ने शिरोल साहब पर विलायत की प्रिवी कौंसिल में दावा दायर कर दिया और इस कार्य के लिए इंगलैंड जाने का विचार किया। पर इस अवसर पर भी ब्रिटिश सरकार ने उनका पासपोर्ट रद्द कर दिया, जिससे उन्हें कोलंबो से वापस लौटना पड़ा। इस तरह सरकार तिलक महाराज के कार्य में पग-पग पर रोड़ा अटकाती रही और वे भी उसका मुकाबला करते हुए भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम को प्रति दिन आगे बढ़ाते रहे।

विदेश यात्रा और होमरूल आंदोलन का प्रचार—

सन् १९१८ में भारतवर्ष के शासन-सुधार के संबंध में 'मांटेग्यु-चेम्सफोर्ड योजना' प्रकाशित की गई और ब्रिटिश पार्लियामेंट ने इस पर भारतीय लोकमत को जानने की इच्छा प्रकट की। इस प्रसंग में होमरूल लीग ने भी एक डेपुटेशन इंगलैंड भेजने का निश्चय किया और इसके लिए लोकमान्य तिलक तथा श्रीमती बेसेंट को सदस्य चुना गया। तिलक महाराज का कहना था कि—"इस योजना से यद्यपि कोई विशेष लाभ होने की आशा नहीं, फिर भी जो कुछ मिल जाय, उसका लाभ उठाना चाहिए और नवनिर्मित कौंसिलों में जाकर अपने अधिकारों को अधिक बढ़ाने के लिए आंदोलन करना चाहिए।" इंगलैंड पहुँचकर उन्होंने मजदूर दल के सदस्यों को—जो भारतवर्ष से सहानुभूति रखते थे, भारत की वास्तविक दशा से परिचित कराया। उन्होंने इंगलैंड में स्थापित कांग्रेस की शाखा का फिर से संगठन किया और उसे ऐसी प्रेरणा दी, जिससे वहाँ भी भारतीय स्वतंत्रता के लिए जगह-जगह आंदोलन होने लगे। जिस समय तिलक महाराज इंगलैंड में ही थे और जगह-जगह घूमकर भारतवर्ष की माँगों को वहाँ की जनता के सम्मुख रख रहे थे, उसी समय भारतवर्ष में रोलेट एक्ट के विरुद्ध जोरदार आंदोलन छेड़ दिया गया और जलियाँवाला बाग का भयंकर हत्याकांड हो गया। लोकमान्य ने 'बंबई क्रानिकल' पत्र के संपादक मि० हार्नीमैन के साथ, जो इंगलैंड में उनके सहयोगी के रूप में काम कर रहे थे, इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अन्यायपूर्ण घटना का घोर विरोध किया और भारतीय अधिकारों के दावे को दूने जोर से ब्रिटिश जनता के सामने उपस्थित किया।

लोकमान्य तिलक भारतीय राजनीति के गुरु थे—

तिलक महाराज की एक विशेषता यह भी थी कि, जिस क्षेत्र में उन्होंने पदार्पण किया, उसमें वे अगुआ बनकर ही रहे। उनकी योग्यता और प्रतिभा बहुत बड़ी-चढ़ी थी और साथ ही वे समस्त भय और हानि-लाभ का ख्याल छोड़कर ऐसी तल्लीनता से काम करते थे कि उनका सबसे आगे बढ़ जाना निश्चित ही रहता था। लोग कहते थे कि तिलक तो 'यथा नाम तथा गुण' हैं। जैसे तिलक सदा मस्तक पर धारण किया जाता है, उसी प्रकार तिलक महाराज भी सदा शीर्ष स्थान पर ही रहते हैं।

साधारण राजनीतिक कार्यकर्ता और नवयुवक आंदोलनकारी ही नहीं लाला लाजपतराय, महात्मा गाँधी और अरविंद घोष जैसे महारथी भी उनको गुरु की तरह पूज्य ही मानते थे। वे आयु में इन सबसे बड़े थे और विद्या की निगाह से भी अधिक ऊँचे थे। साथ ही हृदय की शुद्धता, आचरण में पवित्रता, धर्म में आस्था, वार्तालाप में स्पष्टता, उद्देश्य में अडिगता और सबसे बढ़कर देश के लिए सब कुछ निछावर करने की मनोवृत्ति आदि अनेक सद्गुण उनमें ऐसे पाये जाते थे कि जो कोई उनके पास आता था, वही पूरी तरह प्रभावित हो जाता था। देश-सेवा तथा भारतीय जनता के उद्धार को उन्होंने अपने जीवन का एक व्रत बना लिया था। कठिन से कठिन अवस्था में भी वे उससे पैर पीछे नहीं हटाते थे। जब उनके बड़े पुत्र विश्वनाथ का देहांत छोटी आयु में ही हो गया तो वे उसकी अंत्येष्टि क्रिया करके जैसे ही घर लौटे, वैसे ही सार्वजनिक कामों में लग गये। यह देखकर उनके एक मित्र ने कहा—"क्या आपको अपने पुत्र से प्रेम नहीं था ? कम से कम आज तो आपको यह काम-काज बंद रखना चाहिए।" तिलक महाराज ने उत्तर दिया—"मुझे विश्वनाथ बहुत अधिक प्रिय था। उसकी मृत्यु का मुझे बहुत शोक है। पर अभी मेरे अन्य लाखों पुत्र जनता के रूप में मौजूद हैं, उनकी हित-रक्षा, भलाई का काम भी तो मुझे निरंतर करते रहना आवश्यक है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पत्नी के वियोग के अवसर पर भी उन्होंने ऐसा ही धैर्य का परिचय दिया था। उस समय वे मांडले की जेल में थे और पत्नी की मृत्यु का समाचार उनको तार द्वारा भेजा गया। यदि तिलक महाराज चाहते थे तो उस अवसर पर सरकार से प्रार्थना करके घर आ सकते थे, पर उन्होंने पूर्ण आत्म-संयम से काम लिया। उन्होंने उत्तर में लिखा कि—"इस समाचार से मेरे दिल और दिमाग को बड़ा धक्का लगा है और शोक हुआ है। ऐसे अवसर पर मैं उसके पास न रह सका, इसका मुझे जितना दुःख है, उसे मैं लिख नहीं सकता। पर यहाँ भी मैं देश के प्रति अपना कर्तव्यपालन करने के लिए जेल की कोठरी में बैठा हुआ हूँ। यह भी भगवान् का विधान है और उसे हमको स्वीकार करना ही पड़ेगा।"

लोकमान्य तिलक का चरित्र हमेशा पवित्र और शुद्ध रहा। अन्य अनेक नेताओं की तरह उनके ऊपर कभी सार्वजनिक धन को अपना लेने अथवा सदाचार के विरुद्ध किसी प्रकार का कृत्य करने का आरोप नहीं लगाया गया। आचार-विचार की दृष्टि से वे पक्के भारतीय थे। उन्होंने अपनी धोती, अंगरखी और पगड़ी को कभी नहीं छोड़ा। विदेशों की बड़ी-बड़ी सभाओं में वे इसी तरह गये और इंगलैंड के शासनकर्ताओं से भी उन्होंने इसी वेष में भेंट की। सूरत कांग्रेस के अधिवेशन पर हमारे एक मित्र ने उनको देखा कि अन्य महाराष्ट्रीय प्रतिनिधियों के साथ नंगे वदन केवल धोती पहिने और लंबी चोटी फटकारते, वे भोजन करने को इस प्रकार जा रहे थे कि उनमें और अन्य लोगों में कुछ भी अंतर नहीं जान पड़ता था। भारत-पूज्य नेता होने पर भी सबमें घुल-मिल कर रहने के इसी गुण ने उनको जनता के हृदय का हार बना दिया था।

समाज सुधार और तिलक

यद्यपि आचार और व्यवहार में तिलक महाराज कट्टर धार्मिक माने जाते थे, पर वे अंधविश्वासी नहीं थे। वे जान-बूझकर किसी धर्म संबंधी नियम का उल्लंघन कभी नहीं करते थे, पर अपने कर्तव्य पालन में दिखावटी परंपरा की बातों को बाधक भी नहीं होने देते थे। जब अपने मुकदमे और होमरूल आंदोलन के लिए उनको

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विदेश-यात्रा की आवश्यकता पड़ी, तो यह प्रश्न उठा कि बहुसंख्यक हिंदू, विदेश-यात्रा को शास्त्रानुसार वर्जित मानते हैं, इसलिए इंगलैंड कैसे जायें ? लोकमान्य ने इस संबंध में काशी के पंडितों से व्यवस्था चाही। पर उन 'कलियुगी' पंडितों ने कहा कि हम विदेश यात्रा की शास्त्रीय व्यवस्था दे सकते हैं, पर इसके लिए पाँच हजार रुपया भेंट देने होंगे। तिलक महाराज, जो स्वयं हिंदू शास्त्रों के सबसे बड़े ज्ञाता थे, इस 'धर्म की दुकानदारी' को देखकर बड़े नाराज हुए और उन्होंने पंडितों की बात को तुरंत ठुकरा दिया। वे स्वेच्छापूर्वक इंगलैंड चले गये और वहाँ से वापस आने पर स्वयं ही शास्त्र विधि के अनुसार प्रायश्चित कर लिया।

वे बाल-विवाह की प्रथा के बहुत विरोधी थे। इस संबंध में अनेक लेखों और भाषणों द्वारा उन्होंने खूब प्रचार किया तथा सरकार से आग्रह किया कि वह इसे कानून द्वारा रोक दे। यद्यपि सरकार उस समय कोई ऐसा कानून न बना सकी, पर लोकमान्य तिलक के स्वर्गवास के पश्चात् बाल विवाह-निरोधक कानून पास हो गया।

समाज-सुधार के संबंध में लोकमान्य तिलक का यही मत था कि इस कार्य में किसी प्रकार की जोर जबर्दस्ती करने के बजाय जहाँ तक संभव हो शिक्षा प्रचार से काम लेना चाहिए। अपने 'केसरी' और 'मराठा' पत्रों में वे इस प्रकार के लोक-शिक्षण संबंधी लेख सदा प्रकाशित करते रहते थे, और उनसे लाखों लोगों का मत् परिवर्तन हुआ इसमें संदेह नहीं।

यद्यपि वर्तमान समय में लोकमान्य तिलक के जमाने की अपेक्षा स्थिति बहुत बदल गई है और सुधारों की गाड़ी बहुत तेजी से दौड़ रही है, पर देश की अल्पशिक्षित जनता और बहुत से पढ़े-लिखे व्यक्ति अब भी लकीर के फकीर बने हुए हैं। वे समयानुकूल आवश्यक सुधारों के क्रियान्वित करने को भी तैयार नहीं होते। इसे हम न बुद्धिमत्ता कह सकते हैं और न कर्तव्य परायणता। लोकमान्य तिलक का चरित्र हमको बतलाता है कि किस प्रकार मनुष्य अपने धर्म पर पूर्णतया दृढ़ रहकर भी हानिकारक रूढ़ियों के बंधनों को तोड़ सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोकमान्य सच्चे धर्म का पालन करने वाले थे। वे अनेक बार जेल गये और वहाँ जाकर बहुत कष्ट-सहन भी किया, यह सब धर्म के आधार पर ही करते थे। 'तिलक जीवनादर्श' के लेखक ने इस संबंध में उनकी प्रशंसा करते हुए लिखा है—

"तिलक आत्मिक बल में अद्वितीय थे, इसलिए इंगलैंड के "रिव्यू ऑफ ट्रिव्यून" के संसार प्रसिद्ध संपादक श्री० डब्लू० टी० स्टेड के सामने जेल जाना साधारण बात समझते थे। तिलक ने आत्म-बल से गोरी नौकरशाही को हमेशा नीचा दिखाया। यह आत्मबल तिलक जी ने 'गीता' के कर्मयोग द्वारा ही प्राप्त किया था। उनके रोम-रोम में बिजली चमकती थी, वे जहाँ पहुँच जाते थे, वही स्थान पवित्र हो जाता था और उनके दर्शन से पापी भी नम्र हो जाता था। उनकी प्रतिभा मुर्दे में जान डाल देती थी, जिस किसी के साथ वे वार्तालाप करते थे, वह अपने को धन्य समझ लेता था। तिलक पक्के ईश्वर भक्त थे। ईश्वर में उनका पूरा विश्वास था, इसलिए कठिन से कठिन कार्य को अपने सिर पर ले लेते थे और कहते थे कि—"ईश्वरीय ज्योति ही मेरी मार्ग दर्शक है।"

विद्वता और साहित्य सेवा—

तिलक महाराज की कीर्ति भारत के कोने-कोने में फैलने का मुख्य कारण उनकी अकृत्रिमता ही थी, पर विदेशों में वे अपनी विद्वता के लिए ही विशेष रूप से प्रसिद्ध थे। सबसे पहले सन् १८९३ में उन्होंने 'ओरायन' नामक ग्रंथ लिखा था। इसमें वैदिक ज्योतिष और गणित के आधार पर सिद्ध किया था। यूनानी-भाषा का 'ओरायन' शब्द भारतीय वेदों के 'अग्रहायण' शब्द से निकला है। इस पुस्तक में यूनानी और आर्य सभ्यता की ऐसी तुलना की गई थी, उसे पढ़कर वेदों के विद्वान् मैक्समूलर और जैकोदी भी मुग्ध हो गये। इस विद्वतापूर्ण ग्रंथ के द्वारा उनका नाम देश-विदेशों के विद्वत्-समाज में फैल गया।

इसके पश्चात् डेढ़ साल की सजा होने के अवसर पर वैदिक-साहित्य का विशेष रूप से अध्ययन करके ज्योतिष, गणित और जीवशास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार उसके कितने ही तथ्यों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समीक्षा की और यह निष्कर्ष निकाला कि प्राचीन आर्य जाति ध्रुव प्रदेश के आस-पास निवास करती थी और वहीं से चलकर वह भारत तथा अन्य अनेक देशों में फैली थी। उनका यह "आर्किटिक होम इन दि वेदाज" (ध्रुव प्रदेशों में आर्यों का घर) नामक ग्रंथ, जो कई वर्ष के कठिन परिश्रम से लिखा गया था, बड़े-बड़े विद्वानों द्वारा बहुत खोजपूर्ण और पुरातत्त्व संबंधी ज्ञान की एक अपूर्व कृति के रूप में स्वीकार किया जाता है।

ये दोनों ग्रंथ अंग्रेजी में लिखे गये थे, इसलिए इनका मान विदेशों में अधिक हुआ। भारत के सामान्य पाठक इनसे बहुत कम परिचित हैं। तिलक महाराज के जिस ग्रंथ ने भारतीय जनता को विशेष रूप से आकर्षित किया, वह उनका लिखा 'गीता-रहस्य' है। यह महाग्रंथ मांडले के कारागार में लिखा गया था और उसमें भारतीय शास्त्रों तथा योरोपियन दार्शनिकों की रचनाओं को मथकर ऐसा 'गीतामृत' खोज निकाला है, जो आज इतने वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी अपनी गरिमा और महत्ता से अपूर्व जान पड़ता है।

"श्रीमद्भगवतगीता" का यह भाष्य और विशेषतः अध्यात्म-तत्त्व से परिपूर्ण भूमिका से युक्त ग्रंथ प्रकाशित होते ही देश भर में इतना अधिक प्रसिद्ध हो गया कि इसकी जो लगभग दस हजार प्रतियाँ प्रथम बार मराठी भाषा में छपीं, वह देखते-देखते कुछ सप्ताह के भीतर ही समाप्त हो गईं और माँग ज्यों की त्यों बनी रही। हम नहीं जानते कि गत सौ वर्षों में, जब से छपी हुई पुस्तकों का प्रचार होने लगा है, कोई इतना बड़ा ग्रंथ इतनी शीघ्रता से बिका हो। उसके बाद तो न मालूम अब तक इस ग्रंथ के कितने संस्करण हो चुके हैं, हिंदी, गुजराती आदि भारत की अन्य भाषाओं में भी अनुवादित होकर यह कितनी बार छपकर बिक चुकी है, उसका पूरा हिसाब बतला सकना कठिन है। इसके प्रकाशित होते ही भारत के धार्मिक जगत् में भी इसकी चर्चा बड़े जोरों से शुरू हो गई और प्राचीन, धार्मिक संप्रदाय के अनुयायी विद्वानों ने अपने सिद्धांत की दृष्टि से तिलक महाराज के विचारों की विवेचना और आलोचना करते हुए कितने ही ग्रंथ 'गीता' की स्वतंत्र टीकाएँ करके प्रकाशित किये। इसमें कुछ भी संदेह नहीं कि उस समय तिलक महाराज के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राजनीतिक आंदोलन के साथ-साथ उनका यह "गीता-विवेचन" भी सार्वजनिक आंदोलन के एक अंग की तरह बन गया था और साहित्य प्रेमी देश भक्तों में इसकी खूब चर्चा होती थी।

और इसमें भी संदेह नहीं कि देश के राष्ट्रीय-जीवन की निगाह से भी यह ग्रंथ एक महत्त्वपूर्ण प्रयत्न है। भारतीय जनता पर 'गीता' का बहुत अधिक प्रभाव है और सभी प्रकार के व्यक्ति इसका परायण और पाठ करते रहते हैं। लोकमान्य के इस भाष्य से पहले भी इसकी पचासों टीकाएँ और भाष्य हो चुके थे, जिनमें शंकराचार्य का भाष्य विद्वानों में बहुत प्रचलित था और सम्मानित माना जाता था। पर इन समस्त प्राचीन भाष्यों में 'गीता' का जो सार निकाला गया था, वह प्रायः वैराग्य और त्यागमूलक ही था। भारत की साधारण जनता 'गीता' को संन्यासियों और संसार त्यागियों के लिए ही उपयोगी मानती थी। अनेक अज्ञानी लोग तो समझते थे कि जो कोई 'गीता' का अध्ययन करेगा, वह घर-बार त्यागकर 'साधू' बन जायेगा ! लोकमान्य तिलक के सम्मुख यह समस्या उस समय प्रकट हुई, जब सोलह वर्ष की आयु में उन्होंने मरणासन्न पिता को 'गीता' सुनाई। उसी समय 'गीता' का महत्त्व और गांभीर्य उनके हृदय पर अंकित हो गया। जैसे-जैसे उनकी आयु और ज्ञान की वृद्धि होती गई, वे इस विषय पर समयानुसार विचार करते रहे। इस अध्ययन का क्या परिणाम हुआ, यह तिलक जी के शब्दों में ही सुनिए—

"जब संस्कृत और अंग्रेजी का अभ्यास अधिक हो गया, तब हमने गीता के संस्कृत-भाष्य, अन्यान्य टीकाएँ और मराठी तथा अंग्रेजी में लिखे हुए अनेक पंडितों के विवेचन समय-समय पर पढ़े, परंतु अब मन में एक शंका उत्पन्न हुई और वह दिनोंदिन बढ़ती ही गई। वह शंका यह है कि, जो 'गीता' उस अर्जुन को, युद्ध में प्रवृत्त करने के लिए बतलाई गई थी कि जो स्वजनों के साथ युद्ध करने को बड़ा भारी कुकर्म समझकर खिन्न हो गया था, उस गीता में ब्रह्मज्ञान से या भक्ति से मोक्ष प्राप्ति की विधि का, निरे मोक्षमार्ग का विवेचन क्यों किया गया है ? यह शंका इसलिए और भी दृढ़ होती गई, कि 'गीता' की किसी भी टीका में इस विषय का योग्य उत्तर ढूँढ़े न मिला। कौन जानता है कि हमारे ही समान और लोगों को भी यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शंका न हुई होगी। परंतु टीकाओं पर ही निर्भर रहने से, टीकाकारों का दिया हुआ उत्तर समाधानकारक न भी जँचे, तो भी उसको छोड़कर दूसरा उत्तर सूझता ही नहीं है। इसलिए हमने गीता की समस्त टीकाओं और भाष्यों को लपेटकर रख दिया और केवल गीता के ही स्वतंत्र विचारपूर्वक अनेक परायण किये। ऐसा करने पर टीकाकारों के चंगुल से छूटे और यह बोध हुआ कि 'गीता' निवृत्तिप्रधान नहीं है, यह तो कर्मप्रधान है।"

इस प्रकार तिलक जी ने अपनी एक धार्मिक रचना द्वारा भी भारतीय जन-जीवन पर ऐसा प्रभाव डाला कि लाखों मनुष्य धर्म—अध्यात्म के उपयोगी स्वरूप को समझ जाने से, अपने जीवन को अधिक उन्नतिशील और समाजोपयोगी मार्ग पर चला सकने में समर्थ हो गये। उस समय से 'गीता' का प्रचार इतना बढ़ा कि जो केवल थोड़े से संन्यासी और साधुओं के पाठ की चीज समझी जाती थी, वह विद्वानों और समझदार व्यक्तियों के अध्ययन और चर्चा का विषय बन गई। इस बीच में इस पर भारत के पचासों विद्वानों ने टीका और विवेचन लिखे हैं, जिसमें महात्मा गाँधी, अरविंद घोष और श्री राधा कृष्णन (भू० पू० राष्ट्रपति) जैसे शीर्षस्थानीय नेताओं के नाम भी लिए जा सकते हैं। तिलक महाराज ने भारतवर्ष के धर्म-भावोत्पन्न सुशिक्षित व्यक्तियों का ध्यान 'गीता' के द्वारा जो समाज सेवा और जन-कल्याण की तरफ आकर्षित किया, यह उनकी असाधारण महानता है।

आध्यात्मिक जीवन का उदाहरण—

लोकमान्य तिलक ने अध्यात्म का विवेचन और प्रचार केवल 'गीता रहस्य' लिखकर ही नहीं किया वरन् और अपने जीवन द्वारा भी देशवासियों के सम्मुख व्यवहारिक-अध्यात्म का आदर्श रखा। वे 'गीता' के अनासक्त-मार्ग के अनुयायी थे, इसलिए एक वैभवशाली गृहस्थ का-सा जीवन बिताते हुए भी कभी उसमें लिप्त नहीं होते थे। उनके लिए परिवार और सेवकों से युक्त अपना विशाल घर और जेलखाने की तंग तथा अँधेरी कोठरी एक समान थी। इसी अनासक्त भावना के आधार पर वे अपनी पत्नी, पुत्र तथा अन्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



स्वजनों का वियोग बिना दुःख-सागर में, निमग्न हुए, सहन कर सके। उनके 'जीवनादर्श' पर दृष्टिपात करते हुए एक लेखक ने कहा है—

"लोकमान्य तिलक का जीवन मनुष्य को शिक्षा देता है कि निम्नलिखित तीन प्रश्नों का उत्तर मनुष्य को अपने कार्यों से देना चाहिए। मैं कहाँ से आया ? क्यों आया ? कहाँ जाना है ? इन तीन सवालों को कार्य रूप में परिणत करने के लिए ही परमात्मा ने हमें मनुष्य योनि में भेजा है। तिलक जी ने उत्तर अपने जीवन द्वारा देकर प्रभु के सच्चे पुत्र होने का अधिकार प्राप्त कर लिया था। भगवान् के कार्य को पूरा करने के लिए ही उन्होंने स्वर्ग का आनंद परित्याग करके भारतवर्ष में जन्म लिया था। भारत को परतंत्रता की बेड़ी से मुक्त करने के लिए रात-दिन घोर प्रयत्न करते रहे। अंत में उसी उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए प्राण परित्याग किया। उनका जीवन संसार में सर्वत्र यश-सौरभ फैलाकर भारतवर्ष में नव-जीवन का संचार करने वाला सिद्ध हुआ। इसलिए तिलक महाराज अजर-अमर हैं। उनके जीवन से दो शिक्षाएँ प्राप्त हो सकती हैं। प्रथम, कैसे जीना ? दूसरी, कैसे मरना ? उन्होंने अपनी आत्मा के, ईश्वर के और जनता के प्रति कर्तव्य का पूर्ण रूप से पालन करके जीवन सफल बनाया था। इसी से उनको मृत्यु का भी भय नहीं था।"

दिनांक ३१ जुलाई, १६२० के दिन बंबई के सरदार गृह में अपनी मृत्यु से कुछ घंटे पहले ही उन्होंने डॉक्टर देशमुख से कहा—"मैं अपनी इच्छा से ही जीवित रहा हूँ और यदि मरना होगा तो केवल अपनी इच्छा से ही मरूँगा।" यह लक्षण किसी "जीवन मुक्त" पुरुष का ही हो सकता है और तिलक भगवान् के जीवन-कार्यों पर दृष्टिपात करके हम कह सकते हैं कि वास्तव में वे संसार में रहते हुए भी सांसारिक विषयों में निर्लिप्त थे।

राजनीतिक मतभेद और स्वाधीनता—

भारतवर्ष के राजनीतिक-संग्राम में लोकमान्य तिलक का स्थान अद्वितीय था और इसी से उनको भारतीय स्वाधीनता का मंत्रदाता कहा जाता है। यह सच है कि भारत वर्ष को अंग्रेजों के चंगुल से छुड़ाने वाले महत्मा गाँधी ही हैं। उन्होंने शांतिमय आंदोलन को देश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भर में फैलाकर इस कठिन समस्या को किसी प्रकार सुलझाया, पर यह भी सर्वथा सत्य है कि यदि गाँधी जी से पहले तीन वर्षों में लोकमान्य तिलक ने देश में राजनीतिक जाग्रति न फैलायी होती और लाखों व्यक्तियों के हृदय में देश के लिए आत्म बलिदान की भावना उत्पन्न न की होती तो महात्मा जी के लिए भी सफलता प्राप्त करना कहीं अधिक कठिन होता।

लोकमान्य भारतवर्ष के लिए वास्तविक स्वतंत्रता के इच्छुक थे, इसलिए जो लोग राजनीतिक आंदोलन में केवल इसलिए भाग लेते थे कि देश को कुछ अधिकार प्राप्त हो जायें और उनके द्वारा हम भी अपनी स्थिति को सम्माननीय बना लें, उनसे उनका मतभेद और संघर्ष हो जाता था। सूरत कांग्रेस के समय यही स्थिति उत्पन्न हो गई थी, सर्व श्री रास बिहारी बोस, सुरेंद्र नाथ बनर्जी, गोखले, फीरोजशाह मेहता, वाचा आदि नरम विचारों के राजनीतिक नेता, देश भर में घोर असंतोष और स्वदेशी आंदोलन होने पर भी वही पुराना राग अलापे जा रहे थे और सरकार से छोटे-मोटे शासन सुधारों की प्रार्थना करके ही संतुष्ट थे। पर लोकमान्य तिलक और उनके सहकारी श्री अरविंद, लाला लाजपतराय, लाला हरदयाल आदि, जनता की जाग्रति और उत्साह को देखकर सरकार से स्वराज्य की माँग को जल्दी ही पूरा कराने पर जोर दे रहे थे। कांग्रेस-अधिवेशन में पहले दिन स्वागताध्यक्ष का भाषण हुआ और उस दिन की अन्य कार्यवाही भी निर्विघ्न समाप्त हो गई। पर दूसरे दिन नरम दल वालों ने सभापति पद के लिए श्री रास बिहारी का नाम पेश किया तो लोकमान्य तिलक ने बोलने का अवसर माँगा, क्योंकि वे इस प्रस्ताव में संशोधन करके लाला लाजपतराय का नाम रखना चाहते थे। यह कोई अनुचित या अनियमित बात न थी। प्रतिनिधियों का बहुमत जिसका समर्थन करता उसी का निर्वाचन किया जा सकता था, पर नरम दल वालों ने कांग्रेस कार्यालय और व्यवस्था पर अपना अधिकार होने के कारण लोकमान्य को बोलने का अवसर देने से इनकार कर दिया। तिलक जी भी अपने बोल सकने के अधिकार पर अड़ गये। इसी पर पंडाल में अशांति और शोरगुल होने लगा और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुछ लोगों ने हाथापाई भी शुरू कर दी, जिससे अधिवेशन भंग हो गया।

नरम दल वाले इसका दोषारोपण तिलक जी पर करते थे, पर उन्होंने जो कुछ किया वह देश को आगे बढ़ाने और स्वतंत्रता के विरोधियों से टक्कर लेने की भावना से ही किया था। उन्होंने उसी समय यह घोषणा कर दी कि—"शासनाधिकार प्रतिवर्ष प्रस्ताव पास कर लेने से प्राप्त नहीं किये जा सकते।" उनके लिए कर्म, करने की आवश्यकता होती है और बलिदान के लिए तैयार होना पड़ता है। साल भर में एक बार शानदार अधिवेशन कर लेना और कुछ प्रस्ताव पास करके फिर साल भर अपने खाने-पीने के धंधे में लगे रहने से सार्वजनिक सेवा के कोई बड़े काम पूरे नहीं किए जा सकते। हमारा तो कहना है कि यह सिद्धांत केवल राजनीतिक सुधारों के लिए ही यथार्थ नहीं है, वरन् धार्मिक सामाजिक, आर्थिक, नैतिक कैसा भी सुधार क्यों न करना हो, उसके लिए सच्चे कार्यकर्ताओं को अपने हित का बलिदान करना ही पड़ता है। इसके लिए प्रेरणा देते हुए लोकमान्य ने कहा—

"हमारी मातृभूमि अपने हर एक पुत्र को उठकर काम करने को कह रही है और मैं नहीं समझता कि उसके पुत्र इस प्रकार की अवहेलना करेंगे, तो भी मैं अपना कर्तव्य समझकर आप सबसे यह प्रार्थना करता हूँ कि पारस्परिक मतभेदों को दूर करके राष्ट्रीय आंदर्शों की पूर्ति के लिए जी जान से उद्योग करें। इस कार्य में प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या-द्वेष अथवा भय की कोई गुंजायश नहीं है। भगवान् हमारे प्रयत्नों को सफल बनायेंगे और हम नहीं तो हमारी आगामी पीढ़ी इसके फलों का उपयोग करेगी।"

सच्चे और निःस्वार्थी कार्यकर्ता का यही मार्ग है। जब तक वह भय और लालच को त्यागकर कार्यक्षेत्र में कूद न पड़ेगा, तब तक सच्ची सफलता कोसों दूर रहेगी। ऐसे व्यक्ति चाहे जनता को धोखे में डालकर कुछ धन हथिया लें, चाहे सामान्य लोगों की भीड़भाड़ में क्षणिक वाहवाही प्राप्त कर लें, पर इन बातों से न तो उनकी भलाई हो सकती है और न देश का कल्याण। राजनीतिक क्षेत्र की बात तो जाने दें, क्योंकि उसमें तो अनेक व्यक्ति चालाकी, धूर्तता और झूठ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को खुल्लमखुल्ला आवश्यक बतलाते हैं, पर जो लोग धर्म और समाज के क्षेत्र में काम करते हुए इस 'कुनीति' का अवलंबन करते हैं, वे तो निश्चय ही स्वर्ग और मोक्ष के बजाय अपने लिए रसातल का मार्ग प्रशस्त करते हैं। हम नहीं समझते कि वे धर्म का नाम लेकर और उसके ज्ञाता, उपदेष्टा बनकर इस प्रकार के आचरण का साहस किस प्रकार करते हैं ? ऐसे लोग या तो ईश्वर को मानते ही नहीं अथवा दूसरों को दिखाने के लिए झूठमूठ उसका नाम लेते हैं। कोई सच्चा आस्तिक धार्मिक मामलों में ऐसी दुरंगी चाल नहीं चल सकता, क्योंकि वह सदैव ईश्वर को भले-बुरे कर्मों का निरीक्षण करने वाला जानता है।

तिलक महाराज की शक्ति का रहस्य—

भारतीय जनता पर लोकमान्य तिलक के इस असीम प्रभाव का क्या कारण था ? किस कारण सर्वशक्ति संपन्न ब्रिटिश गवर्नमेंट उनसे इतना डरती थी कि सदा उनके पीछे कोई न कोई मुकदमा जेल, निर्वासन आदि की सजा लगाती ही रहती थी ? आर्थिक स्थिति की दृष्टि से वे सामान्य स्थिति के व्यक्ति थे, वंश की निगाह से भी कोई राजा या रईस नहीं थे, एक सामान्य स्कूल-मास्टर के पुत्र थे। फिर भी उनमें कोई ऐसी शक्ति उत्पन्न हो गई थी कि जिसके प्रभाव से भारत की जनता, यहाँ के सभी क्षेत्रों के नेता और राजपुरुष उनका लोहा मानते थे।

वह रहस्य यही है कि लोकमान्य तिलक वास्तव में एक महान् आत्मा थे। उन्होंने अपने जीवन के आरंभ से ही देश सेवा और भारतीय जनता के मार्ग-दर्शन का जो व्रत ग्रहण किया, उसे अंतिम क्षण तक यथार्थ रूप में निबाहा और उसकी पूर्ति के लिए अपने तन-मन-धन को पूरी सचाई के साथ अर्पित कर दिया। उनके इस गुण की प्रशंसा करते हुए उनके जीवन चरित्र लेखकों ने मुक्त कंठ से उनके अदम्य साहस और निःस्वार्थ सेवा भावना की अनेक घटनाएँ वर्णन की हैं और अंत में सबका निष्कर्ष इस प्रकार निकाला है—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

"भारत के लिए तमाम यातनाएँ, शांति और धैर्य के साथ उन्होंने सहन कीं। सिवाय फाँसी पर चढ़ाये जाने के भारत की नौकरशाही के पास कोई शस्त्र ऐसा नहीं बचा, जिसका प्रयोग उनके ऊपर न किया गया हो। उनको बार-बार कारागार में बंद किया गया, हथकड़ियों के कंगन उनको पहिनाये गये, जेल में सब तरह की सख्त मजदूरी कराई गई। वे बराबर अदालतों में रगड़े गये, खूब सताये गये। पर एक तपस्वी की तरह ऐसी प्रचंड अग्नि-परीक्षाओं में तपकर वे निरंतर अधिक चमकते ही गए। कारागार की कोठरियों में भी तिलक ने भारत की स्वतंत्रता की माला जपी और सदैव ईश्वर से यही प्रार्थना की कि उनकी इस तपस्या के फलस्वरूप हमारी प्यारी मातृभूमि बंधनमुक्त हो। जेल के निकृष्ट और अस्वास्थ्यकर भोजन को उन्होंने मोहनभोग समझकर ग्रहण किया। उनको अपने शरीर से मोह नहीं था, क्योंकि वे इसे परोपकारार्थ प्रभु की दी हुई वस्तु मानते थे।"

"जिस समय सन् १९०८ में उन पर राजद्रोह का प्रसिद्ध मुकदमा चल रहा था, उस समय नौकरशाही यही चाह रही थी कि किसी प्रकार तिलक महाराज दब जायें और क्षमा माँग लें। पर वे इस प्रकार दबकर जान बचाना जानते ही नहीं थे। वे तो सच्चे शूरमा थे, जो रणक्षेत्र में शत्रु पर चोट करने और उसके प्रहारों को सहने में ही आनंद अनुभव करते हैं। उस मुकदमे में उन्होंने अपने कार्यों तथा विचारों को न्यायमुक्त सिद्ध करने के लिए स्वयं ही पैरवी की और २१ घंटे तक सिंह की तरह गर्जकर भाषण करते रहे। उस समय जान पड़ता था कि एक तपस्वी अपने तपोबल से राजाओं का सिंहासन हिला सकता है। साधन और शक्तिसंपन्न अंग्रेजी सरकार तिलक महाराज की इस दैवी शक्ति से घबरा गई और मनमाना फैसला करके उनको देश से बाहर भेज दिया, ताकि भारतीय जनता उनके उग्रतावादी विचारों की 'छूत' से बची रहे। पर परिणाम यह हुआ कि इस प्रकार आत्मसमर्पण करने से वे देश के बालक से लेकर वृद्ध तक सबके गले के हार बन गये।"

तिलक महाराज से सरकारी अधिकारी और पुलिस वाले कितना भयभीत होते थे, इसका एक उदाहरण हमारे मित्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्री नारायण प्रसाद जी अरोड़ा ने 'मेरे गुरुजन' नामक पुस्तक में दिया है। सन् १६१६ में लखनऊ कांग्रेस के अवसर पर अरोड़ा जी ने उन्हें कानपुर पधारने का निमंत्रण दिया। "पर जब वे अपने सहयोगी श्री खापर्डे के साथ कानपुर आये तो पुलिस ने ऐसा आतंक फैलाया कि कोई उनको अपने घर में ठहराने को तैयार न हुआ। तब एक धर्मशाला में उनके ठहरने की व्यवस्था की गई। उनकी सभा की घोषणा करते हुए भी लोग डरते थे और जिस देशभक्त ने साहसपूर्वक यह कार्य किया, उसे पुलिस ने कोई झूठा इलजाम लगाकर पकड़ लिया और २७ दिन तक हवालात में रखा। जब संध्या समय परेड के विशाल मैदान में तिलक महाराज के भाषण के लिए सभा का आयोजन किया गया तो अधिकारियों की नाराजगी के भय से कोई प्रसिद्ध पुरुष सभापतित्व करने को तैयार नहीं हुआ, तब एक रिटायर्ड प्रधानाचार्य को अध्यक्ष बनाकर काम चलाया गया। पर तिलक जी के भाषण को सुनने के लिए जनता की भीड़ इस प्रकार उमड़ पड़ी कि उस लंबे-चौड़े मैदान में तिल रखने की भी जगह न रही।"

तिलक महाराज नवयुवकों को प्रोत्साहन देकर देश सेवा और राष्ट्रोत्थान की प्रेरणा देने के लिए सदा तैयार रहते थे। वे जानते थे कि यदि आरंभ से ही सेवा और त्याग की भावनाएँ जाग्रत् करके युवकों को सद्मार्ग पर प्रेरित कर दिया जायेगा तो वे निश्चय ही अपना जीवन सार्थक बना सकेंगे। इस दृष्टि से उनके लिए मि० चर्चिल की वह उक्ति पूर्णतया चरितार्थ होती थी, जो उन्होंने इंगलैंड के प्रसिद्ध नेता श्री बालफोर के संबंध में कही थी—

"उन्हें युवकों से प्रेम था। वे उनकी माँगें स्वीकार कर लेते थे और प्रोत्साहन देते थे। उनके हृदय में सदा तरुणों की-सी उमंग रहती थी, किंतु साथ ही वह श्रोता में यह भाव भी उत्पन्न कर देते थे कि उनमें ज्ञान की अनंत राशि संग्रहीत है। वह स्वयं तो कभी घबड़ाते ही न थे, बल्कि अपने आस-पास रहने वाले के साहस को स्थिर रखने से पूरा योग देते थे। वे अत्यंत कष्टपूर्ण और परेशानी की परिस्थितियों में भी सब लोगों को शांत रखते थे और अपने साथ लेकर उस कठिनाई से पार लगा देते थे।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक अन्य लेखक के मतानुसार 'जब हम तिलक जी का ध्यान करते हैं तो हमारा मस्तक गर्व से ऊँचा हो जाता है। जब उनकी ओर दृष्टिपात करते हैं तो हिंदू-संस्कृति का सच्चा स्वरूप सामने आ जाता है। वे सत्य के विरुद्ध कभी किसी से नहीं डरते थे। यदि हम कहें कि भारत में स्वतंत्रता युग श्री तिलक से ही आरंभ हुआ तो इसमें कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं है। जिस समय लोग स्वतंत्रता का नाम भी लेने का साहस नहीं कर रहे थे, उस समय तिलक जी ने उच्च स्वर से यह घोषणा की कि—"स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर ही रहेंगे।"

उनको भारतीयता की वृद्धि का बड़ा ध्यान रहता था। उनकी वेषभूषा और घर के भीतर रहन-सहन भी पूरी तरह भारतीय ही नहीं था, वरन् वे स्वदेशी वस्तुओं के भी बड़े भक्त थे। बंगाल से आरंभ होने वाले सन् १९०५ के प्रसिद्ध स्वदेशी आंदोलन के बहुत पहले ही उन्होंने स्वदेशी वस्तु व्यवहार का प्रचार करना प्रारंभ कर दिया था। इस संबंध में उन्होंने अपने एक भाषण में कहा था कि—"स्वदेशी की जो ज्वाला दिन-प्रतिदिन भड़क रही है, वह अब दबाई नहीं जा सकती। यह तब तक स्थिर रहेगी जब तक हमारे समस्त बंधन टूट नहीं जायेंगे और भारत विश्व की स्वतंत्र जातियों के बीच अपना उचित स्थान प्राप्त न कर लेगा।" लोकमान्य तिलक और उनके समकालीन पंजाब के नेता लाला लाजपतराय और बंगाल के श्री विपिनचंद्र पाल के प्रयत्नों से बंग-भंग आंदोलन के समय स्वदेशी-प्रेम की ऐसी लहर उठी थी कि सामान्य अशिक्षित जनता भी उससे अछूती नहीं बची। घर-घर में स्वदेशी की चर्चा सुनाई पड़ती थी और विदेशी वस्त्र, विदेशी चीनी, साबुन आदि को लोग 'अपवित्र' समझकर त्यागने लगे थे। स्वदेशी के संबंध में अनेक भजन और गीत सार्वजनिक सभाओं में सुनाई पड़ने लगे थे। उसी जमाने में कानपुर में एक 'लावनी-दंगल' में किसी माली ने एक लोकगीत बना कर गाया था—

लाल, बाल और पाल कहें यों सुन के ख्याल न भौं तानो।
छोड़ो सब परदेशी चीजें, चलन स्वदेशी पहिचानो।।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तत्पश्चात् इसी स्वदेशी-व्रत को खद्दर-आंदोलन के रूप में चलाकर महात्मा गाँधी ने पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया। इस विषय में गाँधी जी लोकमान्य तिलक को अपना गुरु मानते थे और जब तक वे जीवित रहे तब तक उनकी सहमति से ही असहयोग आंदोलन को चलाते रहे। लोकमान्य तिलक की तरह महात्मा जी ने माननीय गोखले को भी अपना राजनीतिक गुरु मानते थे, यद्यपि राजनीति में नरम और गरम दलों के प्रमुख नेता होने के कारण इन दोनों में विरोध भी रहा करता था। फिर भी देश सेवा की दृष्टि से गोखले का महत्त्व तिलक जी भी स्वीकार करते थे और सन् १९१५ में श्री गोखले का स्वर्गवास होने पर लोकमान्य ने उनकी अर्थी को कंधा लगाया और उसी समय अपने हृदयोद्‌गार इस प्रकार प्रकट किये—

"यह आँसू बहाने का अवसर है। माननीय गोखले के निधन से भारत की बड़ी क्षति हुई है। इस हानि की पूर्ति किसी प्रकार संभव नहीं। गोखले भारतमाता के अमूल्य रत्न थे, महाराष्ट्र के नेता और कर्तव्यनिष्ठ सेवक थे। उन्होंने अपना सारा जीवन देश के लिए समर्पित कर दिया। परमेश्वर के सम्मुख अपनी कर्तव्य निष्ठा का जितना अच्छा हिसाब गोखले दे सकेंगे, उतना शायद ही कोई दे सके। क्या आप लोग उनके इस रिक्त स्थान की पूर्ति कर सकेंगे?"

इन्हीं दुर्लभ गुणों के कारण महात्मा गाँधी ने अपने राजनीतिक कार्य के आरंभ काल में इन दोनों महान् नेताओं से प्रेरणा लेकर उनको अपना मार्गदर्शक मान लिया था। एक लेखक की सम्मति में "गाँधी जी को यदि तिलक हिमालय के समान अटल, अविचल दिखाई दिये, तो गोखले मंदाकिनी की विमल धारा के समान अत्यंत निर्मल और उदार प्रतीत हुए। तिलक में आत्मगौरव की पराकाष्ठा थी, तो गोखले में, आत्मसमर्पण की। तिलक स्वाभिमानी थे, तो गोखले अतिशय विनम्र।" महात्मा जी ने इन दोनों की ही विशेषताओं को ग्रहण करके भारतीय स्वाधीनता-संग्राम में पदार्पण किया और असंभव समझे जाने वाले लक्ष्य को प्राप्त करके दिखा दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अंतिम समय और अमर कीर्ति—

जिस समय तिलक महाराज विलायत से लौटकर आये उस समय भारतवर्ष की राजनीतिक वातावरण बहुत गर्म था। रौलेट एक्ट के विरुद्ध समस्त नेताओं और दलों ने प्रबल आंदोलन छेड़ रखा था। जलियाँवाला बाग के हत्याकांड के कारण युवकों में रोष की लहर व्याप्त थी और उसके उत्तरदायी जनरल डायर और माइकेल ओडायर से बदला लेने के लिए वे विलायत तक में पिस्तौलें लेकर उनका पीछा कर रहे थे। ऐसे समय में महात्मा गाँधी ने असहयोग आंदोलन का शंखनाद किया। लोकमान्य ने भी एकाध भाषण देकर उसका समर्थन किया और देशवासियों को उसमें भाग लेने की प्रेरणा दी।

पर अब उनका स्वास्थ्य विशेष निर्बल हो चुका था। ६४ वर्ष की आयु में बहुमूत्र की बीमारी अधिक कष्ट देने लगी थी और उन्होंने अधिक इधर-उधर जाना बहुत कम कर दिया था। बंबई हाईकोर्ट में उनका एक मुकदमा था, उसके लिए वे बंबई आये और पाँच-छह दिन तक मुकदमे के संबंध में बहस करते रहे। मुकदमे में तो उनकी जीत हो गई, पर अधिक परिश्रम करने से उनको ज्वर आने लगा। उसके कुछ समय बाद ही २२ जुलाई १९२० को उनकी ६४वीं वर्षगाँठ कोलाबा (बंबई) में बहुत धूमधाम से मनाई गई। उसमें भाग लेने को उन्हें भी वहाँ जाना पड़ा। सार्वजनिक उत्सव के अनेक कार्यक्रमों में उपस्थित रहना आवश्यक होने के कारण स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा और बीमारी बढ़ गई। उनको बंबई के 'सरदार गृह होटल' में लाकर रखा गया, जहाँ वे सदैव ठहरा करते थे। शहर के बड़े-बड़े डॉक्टरों ने इलाज किया और उनको बचाने की बहुत कोशिश की गई, पर कोई उपाय कारगर नहीं हुआ। बीमारी बढ़ती ही चली गई और ३१ जुलाई की आधी रात को उन्होंने अपनी इहलीला संवरण करके महाप्रयाण किया।

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org